फसल का प्रबंधन

फसल का पकना और उसकी कटाई :

- खेत में पौध लगाने के बाद 10–12 महीनों में फसल तैयार हो जाती है।
- यदि फसल को पौधे लगाने के 12 माह बाद काट लिया जाए तो पैदावार अधिकतम होती है।
- एक हेक्टेयर खेत के लिए 20 हजार पौधे से 80 हजार कलमें तैयार की जा सकती है।

फसल काटने के बाद का प्रबंधन :

- जड़ों को जून की धूप में जमीन से निकाला जाना चाहिए ताकि वे सूख जाएं।
- खेत में हल गहरा चलाना चाहिए ताकि सभी जड़े नजर आ जाएं। इन्हें तुरन्त एकत्र कर लिया जाना चाहिए।
- जड़ों को निकालने के बाद साफ पानी में धोकर सुखाया जाएगा और उन्हें 5–7.5 सेमी. के टुकड़ों में काटा जाएगा।
- साफ व शष्क जड़ों को हवारहित पॉलीबैगों में पैक कर स्टोर किया जाएगा।

पैदावार :

- यदि स्थितियां ठीक रहे तो पैदावार 12 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टर हो जाती है

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार
तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष: 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वेबसाईट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्राद्योगिकी का विकास पादप शरीर–विज्ञान, जेएनकेवीवी, जबलपुर–482004 मध्य प्रदेश द्वारा किया गया है।

चित्रक की खेती

सामान्य नाम	:	चित्रक
वानस्पतिक नाम	:	प्लम्बेगो, जायलेनिका
कुल	:	प्लंबागोनिदोसी
उपयोगी भाग	:	जड़ें और दुधिया रस
सामान्य उपयोग	:	चित्रक तापजनक, कब्जहारी, व्राताहारी, भूख वर्धक और खांसी के लिए लाभदायक है। इसकी जड़ों से निकला तेल हड्डियों, जोड़ों में मालिश के लिए भी उपयोगी है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

चित्रक

प्लम्बेगो जायलेनिका

कुल–प्लंबागोनियेसी

प्लंबागो ज़ेलानिका एक सदाबहार झाड़ी है, यह पौधा हमेशा हरा रहता है इसकी जड़ें गठीली और तना सीधा होता है।

जलवायु व मिट्टी :

- यह पौधा गहरी नालीदार रेतीली व चिकनी मिट्टी–युक्त भूमि में पैदा होता है।
- इस पौधे की वृद्धि के लिए आर्द्र स्थिति उपयुक्त नहीं होती है।

रोपण सामग्री :

- चित्रक कलम या बीजों से आसानी से उगाया जा सकता है।
- कलम पकी फसल से मार्च–अप्रैल महीने में एकत्र किए जा सकते हैं जिनकी लम्बाई 10–15 सेंटीमीटर तक और प्रत्येक में कम से कम तीन गांठें होनी चाहिएं।

नर्सरी तकनीक

पौध तैयार करना:

- इनके शीघ्र अंकुरण के लिए काटे गए टुकड़ों का उपचार किया जाता है। उपचार में 500 पी पी एम (पार्ट्स पर मिलियन) नेप्थलीन एसेटिक एसिड का प्रयोग किया जाता है।
- तैयार टुकड़ों को बरसात के मौसम में उपचार के 24 घंटे के अन्दर तैयार की गई क्यारियों में बो दिया जाता है।
- क्यारियों का आकार 10X1 मीटर होना चाहिए और वे ऐसे स्थानों पर हों जहां पेड़ हों और आंशिक धूप रहती हो।
- टुकड़ों को क्रम में बोया जाना चाहिए और 5 सेंटीमीटर का परस्पर अंतर होना चाहिए।
- इन क्यारियों की नियमित रूप से सिंचाई की जानी चाहिए।
- ये टुकड़े नर्सरी में अंकुरण के लिए एक माह का समय लेते हैं।
- जुलाई माह में इन अंकुरित जड़ों को मुख्य खेत में लगा दिया जाता है।
- बीजों को मार्च माह में पॉलीबैगों में बोया जाता है जिसमें रेत, मिट्टी की बराबर मात्रा का मिश्रण होता है।
- ये बीज अंकुरण के लिए 10–12 दिन का समय लेते हैं और तब तक 70% बीजों में अंकुरण निकल आते हैं।

पौध दर :

- एक हेक्टर भूमि के लिए लगभग 80 हजार अंकुरित कलमों या पौध की आवश्यकता होती है।

खेत में पौधे लगाना

भूमि तैयार करना और उर्वरक का प्रयोग :

- मई–जून माह में जमीन तैयार कर ली जाती है।
- मानसून प्रारम्भ होते ही नर्सरी में उगाई गई पौध या अंकुरित कलमें मुख्य खेत में लगा दिए जाते हैं।
- पौधे लगाने से एक माह पहले जब हल चलाया जाता है और जमीन तैयार की जाती है तो उसमें प्रति हेक्टेयर 10 टन उर्वरक में मिलाई जाती है।

पौधों का प्रत्यारोपण और उनमें अन्तर रखना :

- कलमों के अंकुरण के बाद 60–75 दिनों के अन्दर पौध को मुख्य खेत में लगा दिया जाता है।
- पौधे लगाते समय उनमें परस्पर अन्तर 50X25 सेमी. का रखना उचित रहता है। इससे फसल की पैदावार अधिक मात्रा में होती है।

अंतर फसल प्रणाली :

- चित्रक की खेती बागानों में फलदार पेड़ों जैसे अमरूद, आम, या निम्बू जैसे पेड़ों के बीच की जा सकती है।
- इसे मेलिया अरबोरिया, ओरोजाइलम इंडिकम या अन्य औषधीय पेड़ों की प्रजातियों के बीच की जमीन पर भी उगाया जा सकता है।

संवर्धन विधियां (खेती के तरीके) :

- पौधे लगाने के एक माह बाद अगस्त माह में खरपतवार निकालने के लिए पहली गुडाई की जानी चाहिए।
- दूसरी व तीसरी गुडाई हाथ द्वारा क्रमशः अक्टूबर व दिसम्बर माह में की जानी चाहिए।
- फसल की कटाई से पूर्व मई माह में पौधों की कांट–छांट की जा सकती है।

सिंचाई विधियां

- फसल की सिंचाई चार–पांच बार यानि नवम्बर, जनवरी, मार्च, अप्रैल व मई में करना पर्याप्त होता है।
- बहते पानी की सिंचाई में प्रत्येक बार 2 सेमी. तक पानी रहना चाहिए।

बीमारी व कीटनाशक :

- जब पौधे विकास के दौर में होते हैं इन पर सेमी लूपर लार्वे और सुंडी हमला कर देते हैं और पौधों को भारी नुकसान कर देते हैं। ये कलियों और कोपलों को भी खा जाते हैं। इनकी रोकथाम के लिए मैलाथॉन का छिड़काव (स्प्रे) करना चाहिए। जिसे प्रति लीटर पानी में 2 मिली. की दर से तैयार किया जा सकता है। यह छिड़काव 15–15 दिन बाद दो बार करना चाहिए।